बिहार-विधान सभा वादवृत्त

बुधवार तिथि २२ मार्च १९५०

भारत के संविधान के उपबन्ध के अनुसार एकत्र विधान सभा का कार्य-विवरण।

सभा का अधिवेशन पटने में बुधवार, तिथि २२ मार्च १९५० को ११ बजे पुर्वाह्न में माननीय अध्यक्ष श्री विन्ध्येश्वरी प्रसाद वर्मा के सभापतित्व में हुआ।

तारांकित प्रश्नोत्तर

STARRED QUESTIONS AND ANSWERS

अन्न उपजाने की दिशा में खर्च।

*१३१। श्री जयनारायण 'विनीत': क्या माननीय मन्त्री कृषि विभाग यह बताने की कृपा करें कि—

(क) जब से अधिक अन्न उपजाने का आन्दोलन बिहार सरकार की ओर से प्रारम्भ किया गया है, तब से अधिक अन्न उपजाने की दिशा में दिसम्बर, १९४९ तक बिहार सरकार के कितने रुपये खर्च हुए हैं;

(ख) उसके फलस्वरूप प्रान्त भर में कुल कितने एकड़ पड़ती जमीन जोत में आयी है;

(ग) इस जोत के फलस्वरूप कितने टन अधिक खाद्यान्न की उत्पत्ति बढ़ गयी है।

श्री वीर चन्द्र पटेल: (क) कृषि विभाग में अधिक अन्न उपजाओ के सम्बन्ध में पहली अप्रिल १९४३ से लेकर दिसम्बर १९४९ तक कुल खर्च ८८,९०,३९७ रुपया है। यह खर्च बिहार गवर्नमेंट के Agriculture डिपार्टमेण्ट का खर्च है और उसमें centrat Government का जो ५०% हिस्सा रहता है वह नहीं है। साथ ही साथ Revenue Department और irrigation Department के जरिये

माननीय डा० अनुग्रह नारायण सिंह: इसका जवाब दे दिया गया है कि हर जिले से रिपोर्ट आई और उसी basis पर सबका figure जोड़ कर आपको बताया गया कि ३९ हजार एकड़ जमीन reclaim हुई है। अलग २ जिलेवार figure यहां पर मौजूद नहीं है। यह secretariat में है। अगर आप इसे जानना ही चाहते हैं तो इसके लिये दूसरी सूचना दें तो जवाब मिल जायगा।

श्री महेश प्रसाद सिंह: अध्यक्ष महोदय, अभी Finance Minister ने कहा है कि total figure बताया गया है तो मैं जानना चाहता हूं कि जिलेवार figure.... ....

माननीय अध्यक्ष: सरकार ने उत्तर दे दिया कि हर जिले का आंकड़ा देखकर ३९ हजार का figure तैयार किया गया है और सरकार के पास अभी सभा-भवन में प्रत्येक जिले का अलग २ आंकड़ा मौजूद नहीं है।

पंडित धनराज शर्मा: प्रश्न का महत्व हमें मजबूर करता है आप से यह कहने के लिये कि जब हम प्रश्न करते हैं तो सरकार को इस पर पूरी तवज्जह देनी चाहिये। यह कहना मुनासिब नहीं है कि total figure आफिस ने भेज दिया है और जिलेवार figure आफिस में है।

माननीय अध्यक्ष: सरकार को इसके जवाब में जो कुछ कहना था उसे उसने कह दिया है। इसके अलावे और खबर जानना चाहते हैं तो इसके लिये दूसरे प्रश्न की सूचना दें।

श्री प्रभुनाथ सिंह: हुजूर, यह तो question hour है। माननीय सदस्य अभी जो कुछ कह रहे हैं उससे तो यह जाहिर होता है कि यह प्रश्न नहीं है बल्कि बहस है। क्या इसकी इजाजत है ?

माननीय अध्यक्ष: प्रश्नोत्तर के समय अगर किसी सदस्य को पूरा उत्तर नहीं मिला तो उसको पूरक प्रश्नों द्वारा यह जानने का हक है कि कैसे उसको ठीक जवाब नहीं मिला। बहस तो हो ही नहीं सकती।

खाद्यान्न में स्वावलम्बी।

† १३२। श्री जय नारायण 'विनीत': क्या माननीय मंत्री, कृषि विभाग यह बताने की कृपा करेंगे कि—

(क) बिहार प्रान्त को खाद्यान्न के मामले में पूर्ण रूप से स्वतन्त्र बना देने में और कितने समय लगेंगे;

(ख) क्या १९५१ तक यह प्रान्त खाद्यान्न में पूर्ण स्वावलम्बी हो जायगा ?

श्री बीर चन्द पटेल: (क) और (ख) यह आशा की जाती है कि ३१ दिसम्बर १९५१ तक बिहार अन्न के विषय में स्वावलम्बी हो जायगा ।

श्री महेश प्रसाद सिंह: मैं जानना चाहता हूं कि जबसे गवर्नमेन्ट का यह एलान हुआ है कि १९५१ के दिसम्बर तक बिहार को स्वावलम्बी बनाना चाहते हैं उस वक्त से अन्न की उपज में कितनी बढ़ती हुई है । पहले अगर १० लाख टन पैदा होता था तो अब कितने लाख टन की वृद्धि हुई है ।

माननीय डा० सैयद महमूद: यकिनी इस सवाल का जवाब दिया जा सकता है मगर अभी यह पूरी तरह से यह नहीं बताया जा सकता है कि कितना बेशी पैदावार हुई ।

श्री महेश प्रसाद सिंह: मैं यह जानना चाहता हूं कि १९५१ में देश स्वावलम्बी होने की बात जो कही गई है तो यह किस आधार पर कही गई है ?

माननीय डा० सैयद महमूद: figure तो आप से कहा गया है । figure मौजूद है और दिया जायगा इसी figure के बुनियाद पर दो तीन वर्ष की यह योजना (Scheme) है और १९५१ के अन्त तक पूरी की जायगी । जितना production ४८-४९, ४९-५० में हुआ उससे यह पूरी उम्मिद की जाती है कि १९५१ के अन्त तक पूरा हो जायगा ।

श्री महेश प्रसाद सिंह: वही तो हम जानना चाहते हैं कि किस rate से आपका production हुआ था ताकि आप १९५१ तक अपने shortage को पूरा करने की उम्मिद करते हैं ।

माननीय डा० सैयद महमूद: तीन लाख सतर हजार टन का shortage था उसी को पूरा करने के लिये हर साल production बढ़ाया जा रहा है ।

श्री महेश प्रसाद सिंह: किस rate से production अभी तक बढ़ाया है और आगे बढ़ाने की उम्मिद करते हैं ?

माननीय डा० सैयद महमूद: figure मौजूद है आपको दी जायगी ।

सरदार हरिहर सिंह: सरकार ने जवाब दिया कि तीन लाख सतर हजार टन की deficite थी । अभी जो पहला सवाल उठा उससे मालूम हुआ कि १९०२१ टन बढ़ा दिया गया तो साढ़े तीन लाख टन की deficite एक वर्ष में पूरी कर ली जायगी ।

माननीय डा० सैयद महमूद: उसमें से कितनी कमी पूरी हो चुकी है इस तीन साल में ।

खाद्यान्न के उत्पादन में वृद्धि

* १३३ । श्री जयनारायण 'विनीत' : क्या माननीय मंत्री, कृषि विभाग यह बताने की कृपा करेंगे कि—खाद्यान्न की उत्पत्ति में वृद्धि लाने के लिए सरकार की कौन कौन सी स्कीमें हैं, और उनमें से कौन-कौन कार्यान्वित हो रही हैं ?

श्री वीरचन्द्र पटेल : गवर्नमेण्ट के सामने अभी अधिक अन्न उपजाओं योजना के मुताल्लिक नीचे लिखी हुई Scheme है जो बहुत सी काम में लायी गयी हैं और लायी जायँगी:—

1. Minor ahars Pynes and bundhes.
2 Medium Irrigation works.
3. Surface percolations wells
4 Open Borings fitted with rahats.
5. Tube-well schemes.
6. Lift-pumps and engines for raising water from streams and rivers.
7. State lift Irrigation.
8. Drainage of chaurs and Irrigation schemes.
9. Land proclamation by Revenue department.
10. Land reclemation and farming by the Agriculture department.
11. Distribution of chemical fertilizers.
12 Distribution of oil-cakes
13. Pural compost scheme.
14. Town compost scheme.
15. Green manuring scheme.
16. Prize distribution scheme.

इनके जरिये यह उम्मीद की जाती है कि खाद्यान की कमी को १९५१ के अन्त तक पूरी की जायँगी ।

श्री जयनारायण विनीत : क्या ये सभी Scheme चालू हैं ?

श्री वीरचन्द्र पटेल : जितनी Schemes कहीं गई हैं वह सभी काम चालू हैं । लेकिन २, १५, १५, १६, का नतीजा १९५१ में मालूम होगा । (२) यानी medium Irrigation, (१०) State farm, (३) green manuring scheme, इनका Result १९५१ में मालूम होगा । Scheme जितनी हैं सब चालू हैं ।